



पर्सिमोन (जापानी फल) का महत्व उपयोगिता व विस्तार



नरेन्द्र देव सिंह¹, दिव्या पांडे² एवं मनोज कुमार सिंह³

“पर्सिमोन एक महत्वपूर्ण पर्णपाती है और समशीतोष्ण पेड़ों को “डायोस्पायरस काकी” के रूप में भी जाना जाता है, जो मूल रूप से चीन से है और फिर कोरिया, जापान और दुनिया के बाकी हिस्सों में फैल गया। जापानी फल भारत में इस फल का स्थानीय नाम हैं। इसको दुनिया के उपोष्णकटिबंधीय और समशीतोष्ण क्षेत्रों में उगाया जाता है। यह फल विटामिन, खनिज, आहार फाइबर और एंटी-ऑक्सीडेंट का एक अच्छा स्रोत है। ये फल कैलोरी और वसा में कम और विटामिन सी के अच्छे स्रोत होते हैं।”



में लाये गये थे। सर्वश्रेष्ठ बाग प्रबन्धन प्रथाओं के तहत, व्यक्ति पर्सिमोन के विकास से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकता है।

वैज्ञानिक नाम — डायोस्पायरस काकी
(Diospyros kaki)

परिवारिक नाम — ईबेनसी

जीनस — डायोस्पायरस

पर्सिमोन फल भारत में विभिन्न नामों से जाना जाता है:-

हिन्दी — अमरफल

तमिल — पाइसाई

पंजाबी — खुरमा

गुजराती — टीमारू



जब भारतीय परिदृश्य की बात आती है तो ये जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, तमिलनाडु, उत्तराखंड और अरुणाचल प्रदेश में उगाये जाते हैं। पर्सिमोन आकर्षक रंग और आकार के साथ पकने वाले टमाटर के समान दिखता है। खुशबूदार फल बहुत मीठे होते हैं और एक उत्कृष्ट स्वाद लिए होते हैं, पूरी तरह से पकने के बाद ही इन फलों का सेवन करना चाहिए, क्योंकि यह अपने कसैले स्वाद (टैनिन एसिड युक्त) के कारण मुंह में फसने लगता है। इनकी स्थानीय और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर पूरे बाजार में माँग है इस लिए बढ़ते हुये लोकप्रिय बागवानी उत्पादों में से एक है। पर्सिमोन का इस्तेमाल हलवा, कुकीज और ब्रेड में किया जा रहा है। जब पर्सिमोन के पेड़ के विवरण की बात आती है तो इसमें एक काम्पैक्ट फैलने की आदत होती है। अन्य फलों के पेड़ों की तुलना में कम रखरखाव की आवश्यकता होती है। पर्सिमोन के पेड़ सर्दियों में हार्डी होते हैं और ये 20 वीं शताब्दी में यूरोपीय निवासियों द्वारा भारत

पर्सिमोन के प्रमुख उत्पादन देश : चीन, कोरिया, जापान, अमेरिका, ब्राजील, इटली, स्पेन, मिश्र और आस्ट्रेलिया और भारत मामूली उत्पादक देश हैं।

पोषण का महत्व

पर्सिमोन फल में खनिज, विटामिन, एंटी ऑक्सीडेंट, जैसे पोषक तत्व है। जो इष्टतम स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण फल है। यह फल विटामिन सी का अच्छा स्रोत है कैलोरी भी कम है, और आहार फाइबर भी समृद्ध मात्रा में हैं।

प्रति 100 ग्राम खाद्य भाग में पाये जाने वाले तत्व :-

कैलोरी	— 77
नमी	— 78.6 ग्राम
प्रोटीन	— 0.7 ग्राम
मोटी	— 0.4 ग्राम
कार्बोहाइड्रेट	— 19.06 ग्राम
कैल्शियम	— 6 मिग्रा
लोहा	— 0.3 मिग्रा
सोडियम	— 6 मिग्रा
पोटेशियम	— 174 मिग्रा



¹कृषि विज्ञान केन्द्र, पश्चिमी कर्मांग, अरुणाचल प्रदेश

²कृषि विज्ञान केन्द्र, पूर्वी कर्मांग, अरुणाचल प्रदेश

³कृषि विज्ञान केन्द्र, तवांग, अरुणाचल प्रदेश



करता है। फल का आकार गोलाकार से हृदय तक चपटा हो सकता है। जब इस फल के रंग की बात आती है तो यह हल्के पीले-नारंगी से गहरे नारंगी-लाल तक भिन्न होता है।

पर्सिमोन की खेती को दो श्रेणियों में बाँटा गया है, जिनका नाम है "एस्ट्रिजेंट और नॉन-एस्ट्रिजेंट" पर्सिमोन :

कसैला

यह केवल तभी खाया जा सकता है जब यह टैनिन की उच्च सामग्री के कारण पूरी तरह से पका है। कसैले खेती करने वालों के पास परिपक्वता पर फल के गुदे में पानी में घुलनशील टैनिन होते हैं और नरम व पके होने तक अपनी कसैलेपन को सामान्य रूप से नहीं खोते हैं।

गैर-कसैला

यह वगैर पूर्ण रूप से परिपक्व होने पर भी खाया जा सकता है। जिस समय इसका रंग हरे से नारंगी में बदलता है उसी समय टैनिन सामग्री बहुत कम हो जाती है। गैर-कसैले खेती करने वालों ने परिपक्वता पर यह अपना कसैलापन खो देता है और सेब की तरह कोमलता के विभिन्न चरणों में कुरकुरा खाया जा सकता है।

जलवायु की आवश्यकता

पर्सिमोन के पेड़ उपोष्ण कटिबंधीय और समशीतोष्ण क्षेत्रों में अच्छी तरह से विकसित होते हैं और फल देते हैं। अधिकांश पर्णपाती फलों को सर्दियों के द्रवशीतन की आवश्यकता नहीं होती है।

बढ़ते पौधों के लिए मिट्टी की आवश्यकता

पर्सिमोन मिट्टी की एक विस्तृत



विविधता पर अच्छी तरह से पनपती है। हालांकि, वे ज्यादातर अन्य फलों के पेड़ों की तुलना में भारी मिट्टी में उगाये जाते हैं। वे गहरी उपजाऊ, मध्यम बनावट वाली, सूखी मिट्टी में सबसे अच्छी तरह से विकसित होते हैं और पैदा करते हैं। ये पेड़ मिट्टी में बहुत अच्छी तरह से विकसित होते हैं, जहाँ पीएच 6.5 से 7.5 तक होती है। मिट्टी में अत्यधिक लवणता और बोरान के साथ पर्सिमोन के पेड़ अच्छी तरह से नहीं बढ़ते हैं। भूमि की तैयारी के दौरान मिट्टी को समृद्ध करने के लिए अच्छी तरह से विघटित गोबर की खाद (FYM) को पूर्ण रूप से मिलाकर देना चाहिए।

पौधों का प्रसारण

पर्सिमोन बीज के माध्यम से प्रजनन, कलम बाधने का काम और माइक्रो प्रोपोगेशन द्वारा किया जा सकता है। रूटस्टाक के लिए आमतौर पर पर्सिमोन का बीज बसंत ऋतु की शुरुआत के साथ बोया जाना चाहिए, क्योंकि ठंड की वजह से बीज अंकुरण में बाधा डालते हैं। यदि नर्सरी बेड पर उगाया जाते तो ह्यूमस (कार्बानिक पदार्थ) से भरपूर रेतीली दोमट मिट्टी सबसे उत्तम होती है। सभी पर्सिमोन रूटस्टाक में चिप वडिंग अगरस्त महीने के शुरुआत में या टंग ग्रेफिटिंग अप्रैल महीने की शुरुआत में किया जाना चाहिये।

भूमि की तैयारी

खेत की गहरी जुताई करके मिट्टी को भुरभुरा बना लेना

मैगनीशियम	— 8 मिग्रा
कैरोटीन	— 2,710 आई. यू.
थाइमाइन	— .03 मिग्रा
राइबोफ्लेविन	— .02 मिग्रा
नियासिन	— 01 मिग्रा
एस्कॉर्बिक एसिड	— 11 मिग्रा

पर्सिमोन के स्वास्थ्य लाभ

1. पर्सिमोन में वजन घटाने के एड्स पाये जाते हैं।
2. पर्सिमोन में फाइटोकेमिकल्स का एक समृद्ध स्रोत है।
3. यह पाचन के लिये अच्छा होता है।
4. पर्सिमोन अच्छा प्राकृतिक विरोधी रक्तस्त्रावी है।
5. फाइबर युक्त सामग्री होने के कारण मधुमेह रोगियों के लिये अच्छा है।
6. हाइपोटेन्सन उच्च रक्तचाप के लिये अच्छे हैं।
7. यह प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देते हैं।
8. आँखों की सेहत के लिये अच्छा है।
9. पर्सिमोन लाल रक्त कोशिकाओं के उत्पादन में सुधार करता है।
10. पर्सिमोन लिबर की सेहत के लिये अच्छे होते हैं।
11. खुशियाँ हिचकी के लिये एक प्राकृतिक राहत है।
12. पर्सिमोन शरीर में पानी के प्रतिधारक को कम करता है।

प्रजातियों के प्रकार

ये वृक्ष नियमित फल देने वाले और फलों की संख्या सहन करने वाले होते हैं। फलों का आकार विविधता पर निर्भर





चाहिए और किसी भी तरह का क्लोड या खरपतवार को नष्ट कर देना चाहिए। मिट्टी को समृद्ध करने के लिए अंतिम जुताई के दौरान अच्छी तरह से विघटित गोबर की खाद डालें।

पर्सिमोन में रोपण और रिक्वि

पर्सिमोन को 4x4 मीटर से 6x6 मीटर की दूरी पर लगाया जाना चाहिए। यह रिक्वियां विभिन्न प्रकार पर निर्भर करती हैं। पर्सिमोन लगाने से पहले एक उचित लेआउट किया जाना चाहिए और 90x90 सेमी का गढ़ा बना लेना चाहिए। गढ़ा खोदने के लगभग एक महीने के बाद वर्मी कम्पोस्ट को अच्छी मिट्टी में मिला कर गढ़ों को भर देना चाहिए। पर्सिमोन के पेड़ पर अच्छी मिट्टी और धूप वाले क्षेत्रों में रोपण के 5 साल बाद अच्छी तरह से फल लगने लगते हैं। भारत के पहाड़ी इलाकों में बसंत ऋतु की शुरुआत के साथ ग्राफ्टेड पौधों को प्रत्यारोपित किया जाता है।

खेतों की सिंचाई

इसके लिये 20–30 दिनों में अच्छी सिंचाई की आवश्यकता होती है। विशेष रूप से फूल व फल की सेटिंग के दौरान पानी की कमी नहीं होनी चाहिए। बरसात के दिनों में जल के जमाव से पेड़ों को बचाना चाहिए, क्योंकि अधिक पानी इसके पेड़ बर्दाश्त नहीं कर पाते हैं इससे उनके सूखने की सम्भावना बढ़ जाती है।

खाद और उर्वरक

अच्छे उत्पादन के लिए नाइट्रोजन 4–6 प्रतिशत, फास्फोरस 8–10 प्रतिशत और पोटाश 3–6 प्रतिशत / 500 ग्राम प्रति वर्ष प्रत्येक वृक्ष में डालना चाहिए। बसंत ऋतु में इनका प्रयोग करना ज्यादा लाभदायक होता है। वैसे आधी मात्रा वसंत ऋतु में व

आधी जुलाई के महीने में प्रयोग करने से भी फल की पैदावार के ऊपर अच्छा असर पड़ता है। यूरिया में ज्यादा उपयोग के बचना चाहिए।

इंटरकल्चर आपरेशन

किसी भी बगीचे में पौधे की अच्छी वृद्धि और अधिकतम पैदावार के लिए उचित और समय पर परस्पर संचालन करना आवश्यक होता है।

खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार मुक्त बाग बनाने के लिए पेड़ों के तने के आसपास साफ रखना चाहिए। जरूरत के हिसाब से निराई व गुड़ाई करते रहना चाहिए। हर्बीसाइड्स का उपयोग करके यांत्रिक नियंत्रण या रासायनिक नियंत्रण का अभ्यास किया जा सकता है।

पूरिंग

उचित आकार देने के लिए पर्सिमोन की बागवानी के लिए पूरिंग की आवश्यकता होती है। पेड़ को उचित स्थान पर लगाये जाने के बाद युवा पौधों को जमीन से 3 फीट की ऊँचाई तक काट देना चाहिए और बाद में पेड़ों की बेहतर रूपरेखा स्थापित करने के लिए नये अंकुरित शाखा को बढ़ने देना चाहिए। किसी भी कमजोर शाखा को काट कर निकाल दे, जिनकी आसानी से टूटने की सम्भावना हो। आमतौर पर 3–4 सालों तक वार्षिक छाटाई की जानी चाहिए।

इंटरक्रॉपिंग

आमतौर पर पर्सिमोन में पेड़ों में फल आने में पांच वर्ष लग जाते हैं। इसलिए किसान भाई प्रारंभिक वर्षों के दौरान इंटरक्रॉपिंग से अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं। इसमें पत्तेदार सब्जियां, दालें या किसी भी अन्य छोटी फसलों का चयन किया जा सकता है।

पर्सिमोन में कीट और रोग

किसी भी फल के बागवानी में कीटों और रोगों को नियंत्रित करना आवश्यक है। पर्सिमोन के पेड़ किसी भी गंभीर कीटों और बीमारियों से अपेक्षाकृत मुक्त है। कभी-कभी ह्वाइट फ्लाय, थ्रिप्स और माइट्स का सामना करना पड़ सकता है। माइट इन्फेक्शन के कारण समय से पहले फल गिरना शुरू हो जाता है। इनको नियंत्रित करने के लिए, पंखुड़ी गिरने के बाद 1 महीने के अंतराल में 3 बार सेविन 885 पीपीएम का छिड़काव करके नियंत्रण किया जा सकता है।

पोस्ट हार्वेस्टिंग

पर्सिमोन की शेल्फ लाइफ मध्यम से



लम्बी अवधि तक होती है। इस फल को तुड़ाई के बाद 0 से 2 डिग्री सेल्सियस पर 2 से 3 महीने तक स्टोर किया जा सकता है। इसको आकार, रंग के आधार पर फलों की ग्रेडिंग कर सकते हैं और कार्डबोर्ड में पैक कर सकते हैं।

उत्पादन

पर्सिमोन का उत्पादन उसके लगाने की विधि, मिट्टी की ताकत, सिंचाई, पेड़ की आयु, विविधता और अन्य उद्यान प्रबंधन प्रक्रियाओं पर निर्भर करता है। पूरी तरह से विकसित पेड़ से प्रति वर्ष लगभग 160–200 किलोग्राम फल प्राप्त कर सकते हैं।

पर्सिमोन का विपणन

तोड़े हुये और वर्गीकृत फलों को किसी भी स्थानीय फल बाजार में पहुंचाया जाना चाहिए या फलों की प्रसंस्करण इकाईयों की आपूर्ति की जानी चाहिए।

निष्कर्ष— दिरांग, पश्चिमी कमांग जिला जो कि अरुणाचल प्रदेश में स्थित है और जिसकी ऊँचाई समुद्रतल से लगभग 5400 फीट है, पिछले लगभग 10 वर्षों से पर्सिमोन की खेती कुछ चुनिन्दा किसानों द्वारा यहाँ की जा रही है और दिन पर दिन इसका विस्तार भी किया जा रहा है। पर्सिमोन के यूनिक स्वाद, पोषण का महत्व, उपयोगिता, जरूरत व बाजार की माँग को देखते हुये, किसान भाइयों को इसकी और विस्तार की आवश्यकता है। खासतौर से उन क्षेत्रों के किसानों को जो समुद्र तल से लगभग 5500 फीट की ऊँचाई पर रहते हैं, जिससे आने वाले समय में इसकी पैदावार को बढ़ाकर बाजार की जरूरतें पूरी कर सकें व अपनी आय भी बढ़ा सकें।